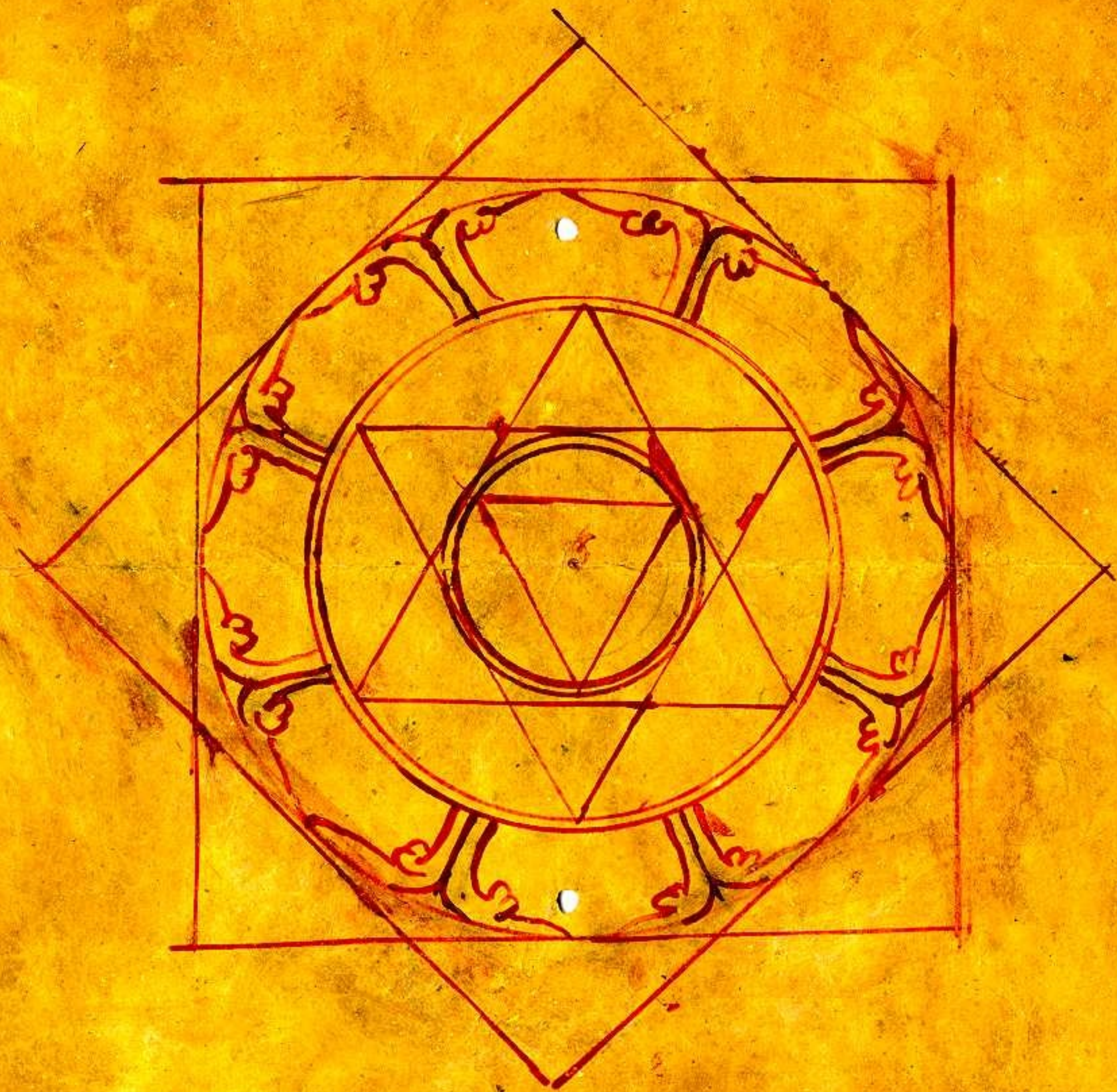






[illegible]

हिनियन्कि यूनं नमामि ॥ कलणया ॥ ॥ सुं स्वाहा ॥ वाक्कासिन्धुवयं कुवकसूमनिराजानि सिंधुवयं सुं सा
 द्यदन् ॥ कुजनिष्पुसिरुलविचवाविन्दुकायालरुका ॥ सिंरुका सोम्यदुप्रसकलजययदासर्वसिद्धार्थकात्री ॥ ला
 ७ श्रीयुजनीयं सकलरुयहवंधवधवीनभाः सु ॥ ॥ कं मया ॥ ॥ दुं स्वाहा ॥ दुष्मीनाथगवयादयूनी
 नमामि ॥ यद्वीनाथयवण वंधयय ॥ मिनीगर्त ॥ थमि माध्वगमाननेका मिआदकं सुवयवसग
 नमामि ॥ सिं पुष्टिया ॥ ॥ दुं सुं स्वाहा ॥ यस्तु क सानिधि सरुमुसमानमर्थ सनिष्ठक कलिगयस्त
 जयक्रम ॥ श्रीगुणनन्दरुववनवात्मकदिकण नमोनभाः सुवयवसगर्त नमामि ॥ सुवमेतुलया ॥ ॥ दुं स्वा
 हा ॥ निर्यनमामि सुवयं कि गणान्समस्तान् दिव्योद्यसिद्धिसकलानयिमानवीद्यान् ॥ यथासक्यवगर्थकजय

लूयसन्न संयायनदिसु सुमलुलवाकलक्ष्मी ॥ सुवयं कि या ॥ ॥ सुं स्वाहा ॥ सीसावधावविषमाहिविदंष्ट्र
 ॥ १४ ॥ संजीवनाय रुचनयविचरुं स ॥ स ॥ लोषनाय नलि ॥ लोषवधरुयनि वल्लिखवृयमिरुसंदर्णदयोमि ॥ डा
 यधीया ॥ ॥ दुं सुं स्वाहा ॥ दिक्काविदुलसिकलाल सिधदवया ल्वधदिन ४ यथमगागिविचजयूणा ॥ गीद्वि
 ४ कटाकनवथीवनडकवर्न कामाश्रवयुधुगव ग्रीकलुनाथ ॥ ग्रीकलुया ॥ ॥ सुं स्वाहा ॥ रुंसिद्धिगासन
 कमलुलुसाकसुर्ग वलाकवाकलिनकलुलमा वरुनी ॥ याकाश्रनारुमवकणवियीअलारा वाक्कीक
 श्रीगुममसागुरुमअलाय ॥ वक्षणीया ॥ ॥ कं स्वाहा ॥ २ ॥ वल्लोपुषीतहिसकलुमृणालगुर्ग ॥ गार्किं विगुलनानि
 लोषजटाकलाय ॥ नगुगुयं विदधनीवृषरु स्तिगाया मोरुध्ववीरुवयुगागुरुमअलाय ॥ मोरुध्ववीया ॥ ॥ यं स्वाहा

१॥ सिन्दूरयुग्मसदृशयुग्मिमावहनी विद्युत्प्रकाशयुग्मिमावहना । मायूषकासनसमाहि निधालवृषी । कोमा
 त्रिकारुवभुमगुरुमञ्जलाय ॥ कोमावीया ॥ ॥ संस्वाहा ॥ गवूषमतिशुभितिरागवृषासनसु । मुहिनयश्चकमूर्खीनय
 नाद्या । नीयासियकुगदयां किनयावृहकां प्रीथिषु ॥ वीणवर्णनीमिसदायसन्ता ॥ वीष्नीया ॥ ॥ संस्वाहा ॥ उक्त
 २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 नाकिं पुकदलाधिकवक्काकिं धावागिधायकठिना ॥ नगकालयकां । मीनासियाणयलयां किनयावृहकां वा
 राहिकां महिषयानगगान्नमामि ॥ वावाहीया ॥ ॥ संस्वाहा ॥ वृहस्यजीवहवर्णनमूथयहृकी । नेशात्य
 लेद्विगणैः यविष्णुमानां । उवायतासनगतां धजवज्रहृका । मेदीनमामिसूत्रकिनवधवर्वा ॥ वृंस्वाणीया ॥
 ॥ संस्वाहा ॥ धनस्तितानवकवक्काकपालमालां स्वद्वामिडिडिमकपालसककिहृकां । दंष्ट्राकपालवधनां जगदकध

नीं । यामूलिकां नवर्णनीमिसदायसन्ता ॥ यामूलाया ॥ ॥ संस्वाहा ॥ सोन्दर्यसाववृषिवाकमलायगादीं पीनसुनील
 निगहावसु (ग) रनाद्यां । खपुणिगुलववका रुयया निवृयां लक्ष्मीनमामिमहर्णीमहनीयवृयां ॥ महालक्ष्मीया ॥ ॥
 १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 संस्वाहा ॥ यगुष्टमूलासिदुक्तयवकवीर्ज हला ॥ निगुमयनववयगुममूर्य । हनिसत्रयूदहनाचिगला
 कनाय । सामप्रियददुगुविनागनीय ॥ रुगवगीया ॥ ॥ वीस्वाहा ॥ उक्तजयीनसुन (ग) रिगदा
 वमाला । यधस्तिगहयकवाववराणि नरा । वन्धुकव ॥ सुसदृशववधायनी । वागीश्वरीहवउस्यूटकुणुवाम
 ॥ वागीश्वरीया ॥ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 वृहिसिहिनिकुर्जप्रीणां । गयकमगुलमहं नवर्णप्रियासि ॥ कर्मया ॥ ॥ संस्वाहा ॥ वृंस्वाणीया नीधियासासु

वयव नमिना साप्रिया मङ्गलाख्या सा गोपी सा च दूर्ज र गवति वसूधमा रुकाय मर्म मूढम् । सा वक्षसा च विष्णु ४ ग्रह
 गलनमिना रुचवीक्षया ला सा नका न क वृया विविध तुल्य दया या नि नीलानि मामि ॥ शिख गुण्या ॥ ॥ अर्धावो ॥ वक्षः ॥
 दू - सूर्य स्वारा ॥ १०७ ॥ धामा कार्दव य वृष्य वृष्य
 विष्णु क मूदा कला । यथा का म्य दग्ध यालिद
 तिसानि त्याय वान न्यिता ॥ दक्ष दिगु मय मया
 वयदं मुनि ४ समा र्ग गर्ग । ख द्वा म् अग्नि गूल या य रुत के ४ काये श्य द्यु म् सुथा यालि श्य रुय वाम या लि स स मा
 र्ग ल न न नी क व ४ ॥ श्री म धाम निशा व वा रु य क व रार्त्त द्वा ना व न्यिता यष्ट व न्यिता जानू वा स न वृथा व वी य मि रु मि

गा। सोम्याय रुवं महा रुय रुवं संसा वक्षु लागु वू४, सायं यावु कृत्तु व४ कूल गु वू४ श्री ग कि नाथ निव ४॥ निव स ॥
 म्या सा व का णि न ग सु न रु व न मि ना म रु मा न अ ग नी वि धा षी या वू न ग य थू न व ज द ना भ ख ला व न्त (गु) । द वा
 । अ य सु (ग) रु व व व व कू सू भ व व व व कू ग रा व सा भ ग्री कू डि का खा वि न व रु स न नं हु न दि थो य भा य
 ४॥ ॥ या सु द्वा दि य रु कृ य रु क रू ना हु नां य वा मा ति कां, व द्वा ग्मा यि य रु कृ य रु क रू ना या वृ रु वि ण्मं हि
 नां । अ ग्ना न न्द म हि यु भा दि न स या या स व द्या सि द्वि र्वा, ना न्द थ ज ग न ४ य था व रु न नीं ग्री वो दि ना मा नि
 कां ॥ थ वी स ॥ ॥ हूं हूं स्वा हा २॥ द्वा ला वि न्दू

४
यथादिति ॥

कौंकीकूं ॥ २ ॥ या लो व द्र ॥
१७ स्वाहा ॥ या सान कानि ॥
॥ लाजाय निष्ठा ॥

॥ कुं स्वाहा ॥ २ ॥ मा कं पुथा वि ॥
॥ २ स्वाहा ॥ २ ॥ त्रि नु श्र व न ॥
॥ धन धान द्या स ज्ञा

॥ ॐ स्वाहा ॥ २ ॥ उ रू द्वा म्भु ज क ॥
॥ यून ४ मूल ना दू नि १०८ ॥ यथा च नि यु क्त ॥
॥ कृ नि वि र्म्य स्वाय क म ४ ॥